

---

# Dharadharakritam Shiva Stotram

---

## धराधरकृतं शिवस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Dharadharakritam Shiva Stotram

File name : dharAdharakRRitaMshivastotram.itx

Category : shiva, tAmraparNImAhAtmya, stotra

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : tAmraparNImAhAtmya | adhyAya 52/68-80||

Latest update : December 13, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 13, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

धराधरकृतं शिवस्तोत्रम्



अस्तौषीदग्रतो देवं साम्बमभ्युदयात्मकम् ।  
नमश्शिवाय देवाय सर्वातीताय वेधसे ॥ ६८ ॥  
गुणत्वाकृतिमानाय गुणाकाराय हेतवे ।  
मन्त्रतन्त्रस्वरूपाय पञ्चतन्मात्रसाक्षिणे ॥ ६९ ॥  
अपञ्चीकृतभूताय पञ्चभूतात्मने नमः ।  
तीर्थमूर्त्या जगत्सर्वं पापाक्षाताऽऽत्मसेविनाम् ॥ ७० ॥  
योऽसौ सीदन्तमशुचौ मां पालयतु भूतभृत् ।  
गङ्गाधरः शशिधरो भवो भीमो भवान्तकः ॥ ७१ ॥  
अन्तकस्यान्तकस्सोऽयमवतादंहसो विभुः ।  
यमेनमकृताकारमेकद्वित्रिभेदतः ॥ ७२ ॥  
एकमेव परं प्राहुस्तस्मै सोमाय ते नमः ।  
सर्वेषामेव जन्तूनामन्तर्जीवकलात्मकम् ॥ ७३ ॥  
प्रवृत्तिश्चोपलब्धिश्च कथितः तमुपास्महे ।  
नादबिन्दुकलाभेदैः क्षराक्षरविकल्पनैः ॥ ७४ ॥  
स्तूयते निगमैर्योऽसौ सदा भवतु मे गतिः ।  
यदेकदेशादर्काद्याः द्योतन्ते हि नभस्थले ॥ ७५ ॥  
यदाज्ञया ब्रह्ममुखाः तस्मै ब्रह्मात्मने नमः ।  
केचित्तरन्ति वै मृत्युं केचिदंहो दुरत्ययम् ॥ ७६ ॥  
केचित्तरन्ति दारिद्र्यं नमस्तस्मै दयात्मने ।  
अष्टमूर्तिरनेकात्मा निगमान्तः प्रदर्शितः ॥ ७७ ॥  
सर्वात्मा शङ्करः साक्षी क्षेमाय पुरतोऽस्तु मे ।  
त्वां देवदेवं पुरुषं सद्योजातमनामयम् ॥ ७८ ॥

क्षेमङ्करं वामदेवमघोरं प्रणतोऽस्म्यहम् ।  
ईशानः शाश्वतः साक्षी सोऽयं तत्पुरुषो विभुः ॥ ७९ ॥  
नमो नमश्शाश्वतशान्तिकरिन् शमांवातां भूरिकरप्रियाकरः ॥ ८० ॥  
स नः समस्ताभ्युदयैकहेतुको भवेद्भयानामुपशान्तिकृद्धिभुः ।  
इति ताम्रपर्णीमाहात्म्ये ५२-अध्यायान्तर्गतं  
धराधरकृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।  
ताम्रपर्णीमाहात्म्य । अध्याय ५२/६८-८० ॥

tAmraparNImAhAtmya . adhyAya 52/68-80..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Dharadhara-kṛitam Shiva Stotram*

pdf was typeset on December 13, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

